This question paper contains 8+2 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

4628

B.A. (Programme)/II C

HINDI DISCIPLINE—Paper II

हिंदी अनुशासन—प्रश्न-पत्र II

(हिंदी गद्य विधाएँ, उपन्यास और हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास)

(प्रवेश-वर्ष 2004/2006 और तत्पश्चात् नियमित कॉलेजों के विद्यार्थियों के लिए/NCWEB के विद्यार्थियों के लिए)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

टिप्पणी : प्रश्न-पत्र पर अंकित पूर्णांक नियमित कॉलेजों (श्रेणी 'A') के विद्यार्थियों के लिए अनुप्रयोज्य हैं । तथापि ये अंक, NCWEB के विद्यार्थियों के संबंध में उनके परिणाम के संकलन के लिए नियुक्त अधिनिर्णय के समय पर, उनके आनुपातिक रूप में अधिक होंगे ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) आज जिसे हम बहुमूल्य संस्कृति मान रहे हैं, क्या ऐसी ही बनी रहेगी ? सम्राटों-सामंतों ने जिस आचारनिष्ठा को

इतना मोहक और मादक रूप दिया था, वह लुप्त हो गई, धर्माचार्यों ने जिस ज्ञान और वैराग्य को इतना महार्घ समझा था, वह समाप्त हो गया । मध्य युग के मुसलमान रईसों के अनुकरण पर जो रस-राशि उमड़ी थी, वह वाष्प की भाँति उड़ गई तो क्या यह मध्य युग के कंकाल में लिखा हुआ व्यावसायिक-युग का कमल ऐसा ही बना रहेगा ? महाकाल के प्रत्येक पदाघात में धरती धसकेगी । उसके कुंठनृत्य की प्रत्येक चारिका कुछ-न-कुछ लपेटकर ले जाएगी । सब बदलेगा, सब विकृत होगा—सब नवीन होगा ।

अथवा

ठूँठ वृक्ष आकाश को छूने पर भी अपनी महानता का सिक्का हमारे दिलों पर उस समय तक नहीं बैठा सकता, जब तक अपनी शाखाओं में वह ऐसे पत्ते नहीं लाता, जिनकी शील-सुखद छाया मन के सारे पाप को हर ले और जिसके फूलों की भीनी-भीनी सुगंध हमारे प्राण में पुलक भर दे । 8

(ख) ब्रेख्त भी यही करते हैं—किंतु बिल्कुल दूसरे ढंग से । 'बाह्य परिस्थिति' उनके लिए ऐतिहासिक है—सूक्ष्म अर्थ में नहीं—समय के हाड़-मांस ठोस पिंजर में आबद्ध, जिस सदी में हम जीते हैं, उसके संदर्भ में बेहद, इंटेंस राजनीतिक ! फासिज्म, बन्दी-शिविर, नर-संहार ..... ये महज़ दीवार की छायाएं नहीं, जिन्हें एक आत्मपरक प्रतीक दिया जा सके, क्योंकि ये स्वयं प्रतीक हैं, एक विघटन-प्रक्रिया के, जिसमें हम सब, अलग-अलग व्यक्ति की हैसियत से, शामिल हैं ।

अथवा

गजाधर बाबू खुश थे, बहुत खुश ! पैंतीस साल की लंबी नौकरी के बाद रिटायर होकर घर जा रहे थे । इन वर्षों में अधिकांश समय उन्होंने अकेले रहकर काटा था । इन अकेले क्षणों में उन्होंने इसी समय की कल्पना की थी, जब वे अपने परिवार के साथ रह सकेंगे, इसी

आशा के सहारे वे अपने अभाव का बोझ ढो रहे थे । सांसारिक दृष्टि से उनका जीवन सफल कहा जा सकता था । उन्होंने शहर में मकान बनवा लिया था । बड़े लड़के अमर और लड़की क्रांति की शादियाँ कर दी थीं, दो बच्चे ऊँची कक्षाओं में पढ़ रहे थे । 8

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×4=16

(*i*) 'मज़दूरी और प्रेम' निबन्ध का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए ।

(*ii*) 'करुणा' निबंध में लेखक ने मनोविकारों की जरूरत पर बल क्यों दिया है ?

(*iii*) 'तूफानों के बीच : अदम्य जीवन' के अनुसार बंगाल के अकाल के दौरान कौन-कौनसी बीमारियाँ फैलीं ?

(*iv*) 'भोलाराम का जीव' में चित्रगुप्त ने धरती की राजनीति पर क्या टिप्पणी की ?

(v) 'बिबिया' के आधार पर महादेवी वर्मा की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।

(vi) 'बुधिया' के चरित्र के आधार पर ग्रामीण लड़की की स्थिति को रेखांकित कीजिए ।

(vii) 'ठाकुर का कुआं' में सवर्ण स्त्रियों में हुई बातचीत का परिचय दीजिए ।

(viii) 'डिप्टी-कलक्टरी' में निहित अफसरशाही के स्वप्न पर टिप्पणी कीजिए ।

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 1×3=3

(i) नारायण को साक्षात्कार के लिए कहाँ बुलाया गया ?

(ii) ठाकुर के कुएँ पर किसे नहीं चढ़ने दिया जाता था ?

(iii) बुधिया को पीटने से लेखक को कौन रोकता है ?

(*iv*) बिबिया के पति का नाम बताइए ।

(*v*) भोलाराम का जीव कहाँ छिपा हुआ मिला ?

(*vi*) 'तूफानों के बीच : अदम्य जीवन' के लेखक कौन हैं ?

(*vii*) मजदूर किस कहते हैं ?

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8

(*i*) रमानाथ को इस समय अपने कपट-व्यवहार पर बड़ी ग्लानि हो रही थी । जालपा ने कमरे से लौटकर प्रेमोल्लसित नेत्रों से उसकी ओर देखा, तो उसने मुँह फेर लिया । उस सरल विश्वास से भरी हुई आँखों के सामने वह ताक न सका । उसने सोचा—मैं कितना बड़ा कायर हूँ । क्या मैं बाबूजी को साफ़-साफ़ जवाब न दे सकता था ? मैंने हामी ही क्यों भरी ? क्या जालपा से घर की दशा साफ़-साफ़ कह देना मेरा कर्तव्य न था ? उसकी आँखें

भर आयीं । जाकर मुँडेर के पास खड़ा हो गया । प्रणय के उस निर्मल प्रकाश में उसका मनोविकार किसी भयंकर जन्तु की भांति घूरता हुआ जान पड़ता था ।

(गबन)

(*ii*) रमानाथ की आमदनी तेजी से बढ़ने लगी । आमदनी के साथ प्रभाव भी बढ़ा । सूखी कलम घिसने वाले दफ्तर के बाबुओं को जब सिगरेट, पान, चाय या जलपान की इच्छा होती, तो रमा के पास चले जाते, उस बहती गंगा में सभी हाथ धो सकते थे । सारे दफ्तर में रमा की सराहना होने लगी । पैसे को तो वह ठीकरा समझता था । क्या दिल है कि वाह ! और जैसा दिल है, वैसी ही ज़बान भी । मालूम होता है, नस-नस में शराफ़त भरी हुई है । बाबुओं का जब यह हाल था, तो चपरासियों और मुहर्रिरों का पूछना ही क्या सबके-सब रमा के बिना

(*iii*) 'आपका बंटी' उपन्यास का कथानक स्पष्ट कीजिए ।

(*iv*) 'आपका बंटी' उपन्यास के माध्यम से पारिवारिक सम्बन्धों में आये तनाव को स्पष्ट कीजिए ।

5. उपन्यास **अथवा** निबंध का विकासात्मक परिचय दीजिए । 10

6. संस्मरण **अथवा** रेखाचित्र की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए । 10